BA - I (H)
paper - II

बीरेन्द्र कुमार पासवान
(अतिथि शिक्षक)
राजनीति विज्ञान विभाग
यू आर कॉलेज रोसड़ा

Question :- स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचारों का वर्णन करें?

Ans :- स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक विचार निम्न है।

(1) जाति प्रथा का बिरोध :- हिन्दू धर्म में जाति प्रथा पूर्व में अपनी चरम सीमा पर थी (यू-तो आज भी है) हम आज भी यह दावा नहीं कर सकते हैं कि जाति प्रथा समाप्त हो गई है। पूर्व में कर्म के आधार पर जातियों को चार श्रेणियों में बिभक्त किया गया था।

(1) ब्राह्मण,
(2) क्षत्रिय,
(3) वैश्य और
(4) शुद्र।

इन सभी को अपने कर्मों के आधार पर चार श्रेणियों में बाँटा गया था। जिसमें सबसे नीचले पायदान पर शुद्र को रखा गया था। शुद्र के साथ काफी भेदभाव किया जाता था। शुद्रों को सार्वजनिक कुओं तलाबों में स्थान करने एवं पानी पीने का हक तक नहीं था। एक साथ समूह में बैठकर बिद्यालयों में बैठकर शिक्षा ग्रहन करने का अधिकार तक नहीं था। मंदिरों में प्रवेश व पूजा अर्चना करने नहीं दिया जाता था।

Scanned with CamScanner

शादी यज्ञ में भोज का जब आयोजन किया जाता था तो इन्हें इसमें आने का मनाही था। बड़े-बड़े जमींदार साहूकार इनसे बेगार में काम लेते थे। काम करने के बदले इन्हें उचित मजदूरी नहीं दिया जाता था। मजदूरी माँगने पर इन्हें सजा दी जाती थी। ये कहें कि इन्हें छोटी जातियों का घर जन्म लेने पर तरह-तरह कि यातनाएँ दी जाती थी। जो मानव समाज व सभ्य समाज के लिए घोर अन्याय था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने जब समाज में इस तरह कि असामाजिक जाति भेदभाव को देखा तो इनसे रहा नहीं गया, तथा स्वामी दयानंद सरस्वती ने जाति प्रथा का व समाज में मौजुद भेदभाव का विरोध करना प्रारंभ कर दिया। और अपने स्तर से इस भेदभाव जैसी सामाजिक बुराईयों से समाज को मुक्त कराने हेतु प्रयास प्रारंभ किये। स्वामी दयानंद सरस्वती ने जो इन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ कार्य किया वह आज हम सबों का प्रेरणा श्रोत है।

(2) शुद्धि आन्दोलन का शुरुआत :- हिन्दू धर्म के अन्तर्गत व्याप्त छुआछूत - जाति-प्रथा का भेदभाव एवं सामाजिक उत्पिड़न के कारण कारण बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म को त्याग - कर दूसरे धर्म को अपना लिया था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने ऐसे लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाने के लिए शुद्धि ~~आन्दोलन~~ आन्दोलन चलाया।

(3) नारी अधिकारों का रक्षक - स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्रीयों की रक्षा एवं अधिकारों के लिए आन्दोलन चलाया। पूर्व में समाज के अंदर स्त्री कि दशा आज के दिनों के तरह नहीं था। स्त्रीयों के अंदर समाज में शिक्षा का बहुत ही अभाव था। पर पूर्व में स्त्रीयों को लोग पढ़ाना लिखाना नहीं चाहते थे। जिससे समाज में महिलाओ का दशा ठिक नहीं था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने महिलाओं के शिक्षा का अलख जगाने का भरपुर प्रयास किया। महिला असुरक्षा जो समाज के अंदर काफी व्याप्त था उसमें भी सुधार लाने का प्रयास किया।

(4) मूर्ति पूजा का विरोध – स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिन्दू धर्म के अंदर जो मूर्ति पूजा का ~~विरोध~~ का प्रचलन था। उसका भी कड़ा विरोध किया। परन्तु मूर्तिपूजा का आज भी प्रचलन बड़े पैमाने पर है।

(5) समानता का अधिकार – स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज के अंदर जो छुआछूत बड़े पैमाने पर फैला हुआ था। व्यक्ति व्यक्ति से घृणा करते थे। समाज के अंदर छुआछूत और ~~व~~ असमानता व्याप्त था। स्त्री पुरुष के बीच असमानता छोटी जाति और बड़ी जाति के बीच असमानता। इन सभी सामाजिक कुरीतियों से स्वामी दयानंद सरस्वती काफी आहत हुए। इसने समाज में छुआछूत को समाप्त करने के लिए एवं समाज के अंदर ~~असम~~ समानता स्थापित करने के लिए समाज में जागरूकता लाने का बड़े पैमाने पर कार्य किया।

(6) बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा का विरोध :– स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज में प्रचलित सामाजिक बुराई

दहेज प्रथा, बाल विवाह एवं सती प्रथा का कड़ा विरोध किया। जिसका परिणाम आज देखने को मिल रहा है। हालांकि आज भी बाल विवाह कुछ जगहों पर देखने को मिल जाती है। परन्तु इसमें काफी सुधार हुई है। लेकिन एक सामाजिक बुराई दहेज प्रथा जो आज भी हमारे गाँव व शहर में बड़े पैमाने पर व्याप्त है, आवश्यकता है हम सभी को मिलकर इसे दूर करने का।

Scanned with CamScanner